जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

ISSN 2454-4450

मूल्य ₹ 75

हंस

फरवरी 2026

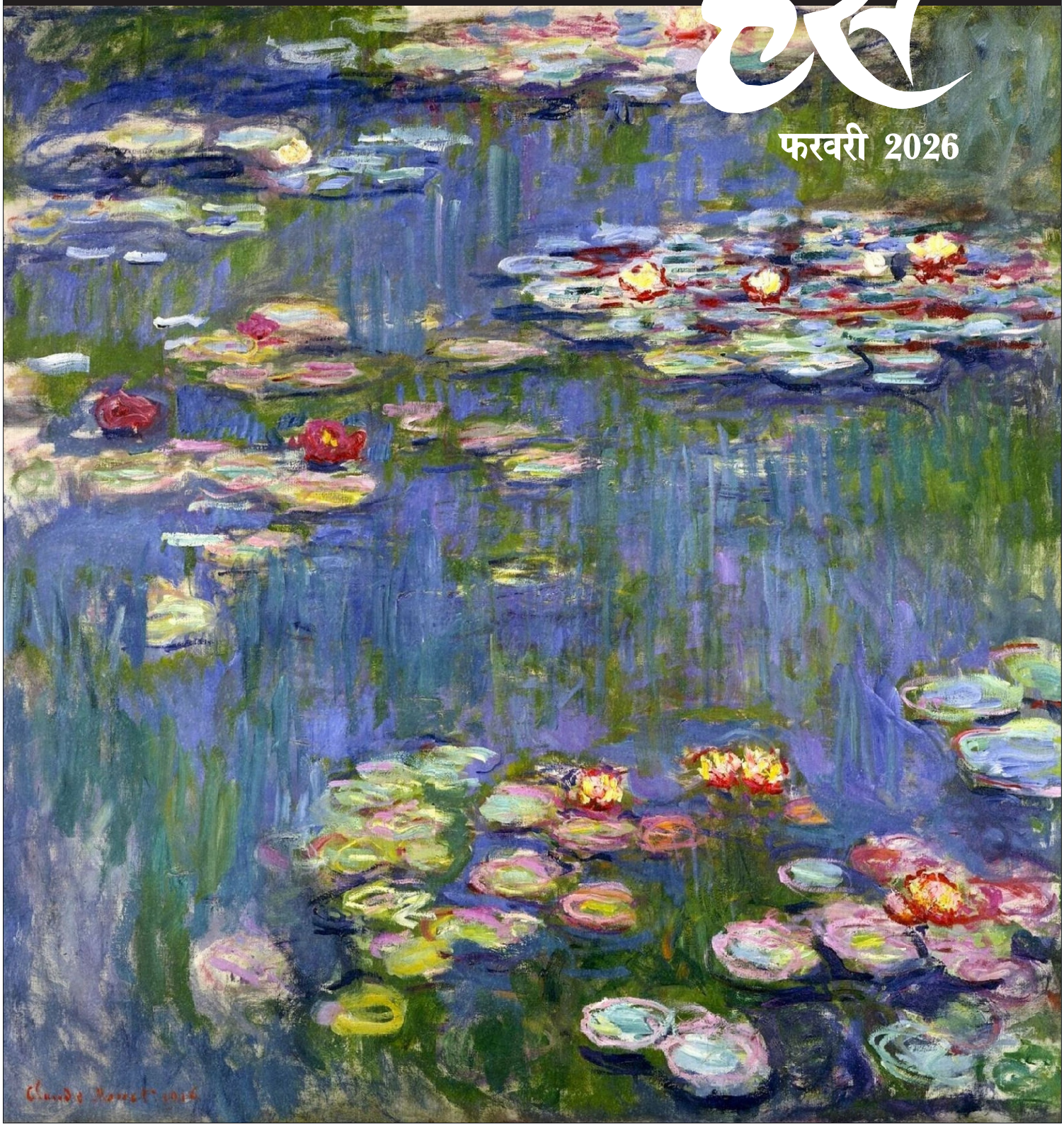

मूल संस्थापक : **प्रेमचंद : 1930**
पुनर्संस्थापक : **राजेन्द्र यादव : 1986**

पूर्णांक-472 वर्ष : 40 अंक : 7 फरवरी 2026

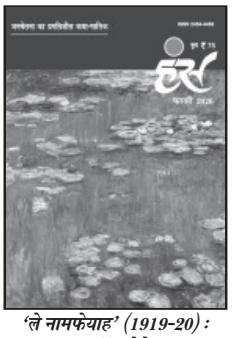

'ले नामफेयाह' (1919-20) : क्लॉड मोने

हंस

जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

संपादक
संजय सहाय
•
प्रबंध निदेशक
रचना यादव
•
कार्यकारी संपादक
विवेक मिश्र
•
व्यवस्थापक/सह-संपादन सहयोग
वीना उनियाल
•
संपादन सहयोग
शोभा अक्षर
माने मकर्तच्यान(अवैतनिक)
•
प्रसार एवं लेखा प्रबंधक
हारिस महमूद
•
शब्द-संयोजन एवं रूपांकन
प्रेमचंद गौतम
•
ग्राफिक्स
साद अहमद
•
कार्यालय सहायक
किशन कुमार, दुर्गा प्रसाद
•
मुख्य प्रतिनिधि (उ.प्र.)
राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल
•
रेखाचित्र
संदीप राशिनकर, विकेश निझावन
कृष्ण कुमार 'अजनबी', अनुभूति गुप्ता

कार्यालय
अक्षर प्रकाशन प्रा. लि.
4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-2
व्हाट्सऐप : 9717239112, 9560685114
दूरभाष : 011-41050047
ईमेल : editorhans@gmail.com
वेबसाइट : www.hanshindimagazine.in

मूल्य : 75 रुपए प्रति
वार्षिक रजिस्टर्ड : 1250 रुपए (व्यक्तिगत)
संस्था/पुस्तकालय : 1500 रुपए (संस्थागत)

वार्षिक पीडीएफ : 600 रुपए (व्यक्तिगत)
पीडीएफ : 700 रुपए (संस्थागत)
विदेशों में : 80 डॉलर
सारे भुगतान मनीऑर्डर/चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा. लि. (Akshar Prakashan Pvt. Ltd.) के नाम से किए जाएं.

हंस/अक्षर प्रकाशन प्रा.लि. से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे. अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है. हंस में प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं. उनसे हंस की सहमति अनिवार्य नहीं है. साथ ही उनके मौलिक या अप्रकाशित होने का उत्तरदायित्व संपादक और प्रकाशक का नहीं है बल्कि यह दायित्व रचनाकार का है.

प्रकाशक/मुद्रक : **रचना यादव खन्ना** द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा.लि., 4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित एवं चार दिशाएं, जी-39/40, सेक्टर-3, नोएडा- 201301 (उ.प्र.) से मुद्रित. संपादक–संजय सहाय.

फरवरी, 2026

इस अंक में

संपादकीय
4. इम्प्रेशनिज़्म : एक क्रांति वह भी (भाग-3) : संजय सहाय

अपना मोर्चा
9. पत्र

न हन्यते
12. कवि जिसे पतझड़ बिल्कुल पसंद नहीं : नरेश सक्सेना
15. कितना कम अधिक है : अशोक वाजपेयी
19. ज्ञानरंजन को जानने की जरूरत : राजेन्द्र दानी
21. साथी वीरेन्द्र यादव का न होना : प्रेमकुमार मणि
25. जनवादी मूल्यों के सजग प्रहरी : मधु कांकरिया
29. एक बेचैन उपस्थिति की याद : राकेश वेदा
31. खुद को ढूंढ़ने का पुरुषार्थ : दक्षेश पाठक
33. चुनौतियों को सहर्ष स्वीकारने वाले : इम्तियाज़ अहमद ग़ाज़ी
35. मां के साथ मेरी साहित्यिक यात्रा : राहुल सेठ

मुड़ मुड़ के देख
37. मोरनामा : इंतज़ार हुसैन ('हंस', मई 1999)

कहानियां
42. रेड लाइट : अरुणेन्द्र नाथ वर्मा
46. तुम प्रेम में वर्चस्व चाहती हो मैं आज़ादी : अजय सिंह
52. पलटवार : कमलेश
58. जबर्जस्त रॉयल्टी : प्रकृति करगेती
64. बिना कब्र वाले : जोगिंदर पॉल (उर्दू कहानी) (अनुवाद : शमीम उद्दीन अंसारी)

कविताएं
62. अनवर शमीम, मालिनी गौतम
63. नीरज, शचीन्द्र आर्य

लेख
68. वंदे मातरम् : अशोक कुमार

यात्रा-वृत्त
71. कोलाज-ए-सफर (2) : रामशरण जोशी

उपन्यास अंश-2
76. सोमालिया का यातनाघर : राजेन्द्र चन्द्रकान्त राय

लघुकथा
30. काला उत्सव : ज्ञानदेव मुकेश

ग़ज़ल
32. शिवांश भारद्वाज 83. चाँद मुंगेरी

परख
81. एक सांस्कृतिक-वैज्ञानिक हस्तक्षेप : संतोष दीक्षित
84. सत्ता, संवेदना और सत्य की पड़ताल : सुभाषचन्द्र गुप्त
86. प्रेम की शेड्स और बदलते समाज की कहानियां : सुधांशु गुप्त
89. स्त्री के अंतर्मन और परंपरागत विचारों की शुद्धि : पुष्पराज यादव

साहित्यनामा
91. जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान : साधना अग्रवाल

रेतघड़ी
95

इम्प्रेशनिज़्म : एक क्रांति यह भी (भाग-3)

इम्प्रेशनिस्टों ने पौराणिक और ऐतिहासिक विषयों पर केंद्रित धर्मग्रस्त और अतीतग्रस्त मानक चित्रकारी को त्याग दिया और आधुनिक पल को क़ैद कर लेने वाली सर्वथा नए तरह की चित्रकारी के साथ पेरिस में इम्प्रेशनिज़्म का सूत्रपात किया. अनेक कलाविदों का मानना है कि इम्प्रेशनिज़्म महज एक शैली न होकर, कला को आधुनिक पलों से जोड़ती एक जीवन दृष्टि है.

आपसी मतभेदों के कारण 1881 की छठवीं इम्प्रेशनिस्ट प्रदर्शनी से रेनुआर और मोने बाहर हो चुके थे. और मोने को लगने लगा था कि वे भी रेनुआर की तरह एकल प्रदर्शनियों में ज्यादा सफल साबित होंगे. सलों से अपने संबंधों को जारी रखने के कारण डेगा–मोने और रेनुआर पर रह-रहकर अपनी भड़ास निकाला करते थे. और पिसारो के उदारवादी विचारों के कारण डेगा उनकी सूरत भी नहीं देखना चाहते थे.

उधर इम्प्रेशनिस्ट चित्रों पर फ़िदा पॉल ड्यूरां-रुएल 1871 से ही इनका संग्रह करते आ रहे थे और उनके पास इन चित्रों का विशाल भंडार बन गया था, जो ख़रीददारों की प्रतीक्षा कर रहा था. पॉल ड्यूरां को यह अंदाज़ा तो लग ही गया था कि उनकी किस्मत भी इन चित्रों की सफलता से ही बंध चुकी है. लिहाज़ा इन लोगों के आपसी मनमुटावों के बीच उन्होंने ख़ुद ही कमान संभाल ली और 1882 की सातवीं प्रदर्शनी को अपने बूते और नियंत्रण में आयोजित किया. 1 मार्च से '251, सेंट ऑनरे' में आयोजित इस प्रदर्शनी में इस बार इन चित्रों को पसंद करने वालों की संख्या में भारी इज़ाफ़ा हुआ. आलोचकों के नश्तर भी भोथरे पड़ने लगे थे. कुल मिलाकर इन चित्रों की स्वीकृति बढ़ रही थी.

1882 की प्रदर्शनी में पॉल ड्यूरां ने मोने, रेनुआर, पिसारो, मोरिसो और सिसले को भागीदारी के लिए तो मना लिया, किंतु एडगर डेगा जो कि पिछली छह प्रदर्शनियों के अगुआ रहे थे, इस प्रदर्शनी से बाहर रहे. उनकी घनिष्ठ मित्र मैरी कसाट ने भी उनके सम्मान में ख़ुद को इस आयोजन से अलग कर लिया था. कुछ चित्रकार जुड़े भी. काईबोट और गीयोम के साथ एक नए चित्रकार पॉल गॉगां ने भी इसमें शिरकत की. इस प्रदर्शनी में मोने ने अपने 35 चित्रों को प्रदर्शित किया था जिसमें अधिकांश उनके 'नॉर्मंडी तट' शृंखला से थे. रेनुआर ने अपने प्रसिद्ध चित्र 'लंचियन ऑफ़ द बोटिंग पार्टी' सहित 29 चित्र प्रदर्शित किए थे. इस सातवीं प्रदर्शनी ने इम्प्रेशनिस्ट चित्रकला की मूल आत्मा